

विशेष

काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग

भगवान भोलेनाथ सभी भक्तों की मनोकामना पूरी करते हैं। धार्मिक मान्यताओं के आधार पर भगवान शिव के प्रतीक के रूप में 12 ज्योतिर्लिंग शमिल हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में ये ज्योतिर्लिंग स्थापित हैं। ऐसा विश्वास है कि इन 12 ज्योतिर्लिंगों में भगवान भोलेनाथ स्वयं विद्यमान होते हैं। कहते हैं कि भगवान शिव के इन ज्योतिर्लिंग के दर्शन मात्र से व्यक्ति को प्राप्ति होती है। आज जानते हैं इन्हीं ज्योतिर्लिंगों में से भगवान शिव के साथ ज्योतिर्लिंग के बारे में। हिन्दू धर्म के सबसे पवित्र शक्ति को वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि भगवान विश्वनाथ वहाँ ब्रह्मांड के स्वामी के रूप में निवास करते हैं। यह एक ऐसा नार है, जिसके बारे में शिव पुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है कि जब तक यह नगर है तब तक सुधि का अंत नहीं होगा।

काशी विश्वनाथ मंदिर-12 ज्योतिर्लिंगों में से सातवां काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर वाराणसी में गंगा नदी के प्रशिक्षण घाट पर स्थित है। काशी भगवान शिव और माता पार्वती के सबसे प्रिय स्थान में से एक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ बाबा विश्वनाथ के दर्शन से पूर्व महादेव के दर्शन से पहले भैरव जी के दर्शन करना जरूरी माना जाता है, इसके पीछे मान्यता है कि भैरव जी के दर्शन किए बारे में विश्वनाथ के दर्शन का लाभ नहीं प्राप्त होता। मान्यता है कि भगवान श्री हांशुष्णु ने भी काशी में ही तपस्या करने वाले विश्वनाथ को इन्हीं प्रिय है कि ऐसा माना जाता है कि सावन के महीने में भोले बाबा और माता पार्वती काशी प्रधान पर जरूर आते हैं।

काशी विश्वनाथ मंदिर का पौराणिक इतिहास

काशी विश्वनाथ मंदिर का इतिहास बहुत ही वृद्ध है। पौराणिक कथाओं की मानों तो भगवान शिव माता पार्वती के साथ वहाँ उपर्युक्त कैलाश में रहते थे और माता पार्वती अपने प्रियों के बीच भगवान शिव से साथ ले जाने का आग्रह किया, तब भगवान भोलेनाथ ने उनकी बात मानी और उन्हें लेकर काशी आए और यहाँ पर वह विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हो गए।



गण था। उसके बाद एक क्रमागत बड़ा जोड़ 1839 में था, जब महाराजा रणजीत सिंह द्वारा उत्तर के दिए गए सोने के साथ दो शिखर थे।

वहाँ है वाराणसी

नगरी से जुड़ी मान्यता

वाराणसी में भगवान को स्थान माना जाता है। एक मान्यता यह भी है कि महादेव खुद यहाँ मरणासन व्यक्ति के कानों में तारक मंत्र का उपर्युक्त सुनाते हैं। इनका उद्देश्य मरण में भी किया गया है। प्रत्येक अपने पर भी काशी का कभी लोप नहीं हुआ, ऐसा इसलिए व्यक्तिके कहते हैं कि पहले ही भोलेनाथ खुद काशी को अपने त्रिशूल पर उठ लेते हैं, इस तरह काशी सुरक्षित हो जाती है।

रक्नद षष्ठी-हिंदू धर्म

का प्रमुख उत्सव

स्कन्द षष्ठी का ब्रत कार्तिक मास में कृष्ण पक्ष की पश्ची तिथि को किया जाता है। तिथितत्व ने चैत्र शुक्ल पक्ष की पश्ची को स्कन्द षष्ठी कहा है। यह ब्रत संतान पश्ची नाम से भी जाना जाता है। कुछ लोग आपाद मार की शुक्ल पक्ष की पश्ची को स्कन्द षष्ठी मनाते हैं। स्कन्दपुराण के नारद-नारायण संवाद में संतान प्रसिद्ध और संतान को पूजा देने के लिए इस ब्रत का विधान बताया गया है। एक दिन पूर्व एवं से जावाप करके षष्ठी को कुमार अथवा कर्तिक की पूजा करनी चाहिए। तमिल प्रदेश में स्कन्द षष्ठी महात्वपूर्ण है और इसका समाप्त मनियों ये किन्तु भवनों से होता है।

प्राचीनता एवं प्रमाणिकता

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र के मान्यता जाने वाले पर्व के रूप खारें करता है। स्कन्द षष्ठी के संबंध में मान्यता है कि राजा शशीति और मार्यान ऋषि च्यवन का भी पैतृहसित कथानक इस्तेजु जुड़ा है। इसमें स्कन्द देव (कर्तिकेय) को स्थापना करके पूजा की जाती है तथा अंडांड दीपक जलाए जाते हैं। भक्तों स्कन्द षष्ठी महात्म्य का नित्य पाठ किया जाता है।

इस ब्रत की प्राचीनता एवं प्रमाणिकता स्वयं परिलक्षित होती है। इस कारण यह ब्रत त्रिद्वापात्र

